जल ही जीवन

भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'
चन्द्रलोक कालोनी, शहजादपुर (उ.प्र.)

जल ही जीवन है, जीने का जल ही है आधार।
जल के बिना नहीं रह सकता जीवन सदाबहार।।
जल बिन जीवन जल जाता है,
काम नहीं कुछ चल पाता है,
जीवन का जल से नाता है,
जल ही तो जीवन दाता है,
करें लोक हित जल की पूजा, करके आत्मसुधार।
कभी प्रवाहित करें न जल में विषमय मैल–विकार।।
सारे जग में जल की माया,
जीवन को जल ने ही जाया,
सागर में जल ही लहराया,
बादल ने जल ही बरसाया,
जल से ही तो जाग्रत रहता हरा–भरा संसार।
परमशक्ति परमेश्वर का भी जल में ही अवतार।।
जल को व्यर्थ नहीं जाने दें,
जीवन में जल लहराने दें,
जल को जीवन कहलाने दें,
जल में मल को मत जाने दें,
निर्मल जल ही है जीवन का सदा अमृत उपचार।
जल से ही संभव होता है धरती का श्रृंगार।।

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं। मेरे विचार में हिंदी ही ऐसी भाषा है।

लोकमान्य तिलक